मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

बैंगन प्रमुख के कीट तथा उनकी रोकथाम

श्वेता पटेल
कीट विज्ञान विभाग, गोबिन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखण्ड–263145
ई–मेल : patel19.rk@gmail.com

बैंगन की खेती उत्तर भारत में मुख्यतः दो ऋतुओं, ग्रीष्म कालीन तथा खरीफ में होती है। बैंगन के पौधों को कीटों द्वारा हानि पौधावस्था से आरम्भ होकर फल लगने तक होती है। मुख्य रूप से बेधक कीट, पत्तियों को काटकर अथवा खुरच कर खाने वाले अथवा रस चूसने वाले कीटों से हानि होती है।

बेधक कीटः बैंगन में दो प्रकार के बेधक कीट लगते हैं। एक कीट मुख्य रूप से मुख्य तने को बेध कर खाता है तथा कोमल प्ररोहों तथा फलों के भीतर रह कर खाता है।

प्ररोह तथा फल बेधक कीट : यह बैंगन का अत्यन्त ही हानिकारक कीट है।

पहचान : इस कीट के जीवन में चार अवस्थायें अण्डा, सूड़ी, प्यूपा तथा प्रौढ़ पतंगा होती है। हानि केवल सूंडी द्वारा ही होती है। पूर्ण विकसित सूंडी झुर्रीदार, लगभग 25 मि0 मी0 लम्बी तथा हल्की गुलाबी रंग की होती है।

हानि तथा लक्षण :

इस कीट का प्रकोप फल लगने से पूर्व तथा फल लगने पर दोनों अवस्थाओं में होता है। आर्थिक रूप से फल लगने की अवस्था में इसका प्रकोप अधिक हानिकारक है।

अण्डों के फुटाव के पश्चात् नवजात् सूंड़ियाँ थोड़े समय के लिए पत्तियों आदि पर रहने के पश्चात् कोमल प्ररोहों में छिद्र करके घुस जाती है और प्ररोहों के भीतर रहकर सुरंग बनाती हैं। इसके कारण प्ररोहों के शीर्षो तक भोजन न पहुँच पाने के कारण प्ररोह मुरझा कर लटक जाते हैं, इससे पौधों की वृद्वि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ग्रसित फल टेढ़े मेढ़े हो जाते हैं, अत्याधिक छोटे फलों का विकास रूक जाता है तथा फलों में सड़न भी आरम्भ हो जाती है।

रोकथाम :

यह कीट बहुत अल्पकाल के लिए पौधों की सतह पर रहता है और सूंडी प्रायः समस्त जीवन पौधों के विभिन्न भागों के भीतर रहकर व्यतीत करती है, केवल कीटनाशियों के प्रयोग द्वारा लाभकारी नियंत्रण सम्भव नहीं है। अतः एकीकृत नियंत्रण अत्यन्त आवश्यक है।

1. सर्वप्रथम ऐसी प्रजातियों को लगाना चाहिए जिनमें इस कीट का प्रकोप कम होता हो। पूसा पर्पिल क्लस्टर, ए0 आर0 यू0–2सी0, एस0 एम0 17–4, पन्त सम्राट तथा पंजाब बरसाती लम्बे फलों वाली एवं पूसा पर्पिल राउण्ड, गोल फलों वाली प्रजातियों पर इस कीट का प्रकोप कम होता है।
2. ग्रसित प्ररोहों की सूंडी सहित तोड़ कर तथा ग्रसित फलों को एकत्रित करके नष्टकर देना चाहिए। ग्रसित फलो को पौधों में नही छोड़ना चाहिए।
3. फसल पूरी हो जाने के पश्चात् पौधों को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।

पत्तियों पर लगने वाले कीटः

बिंदीदार अथवा एपीलेक्ना बीटिल :

पत्तियों पर लगने वाले कीटों में यह कीट प्रमुख है। प्रौढ़ बीटिल गोलाकार, पीले भूरे रंग का, मोटे पंखों वाला होता है। इसकी विभिन्न जातियों पर पंखों पर काली बिन्दीयों की संख्या भिन्न–भिन्न होती है। सालोनेसी कुल के पौधों पर पाये जाने वाली जाति के भारीर पर 28 बिंदियाँ पाई जाती हैं। अण्डे के बाद की अवस्था भृंगक पीले रंग के तथा भारीर के पृष्ठ भाग पर अनेकों भूलों से ढके रहते है।

हानि तथा लक्षण :

इसके ग्रब तथा बीटील दोनों ही पत्तियों की त्वचा को खुरच कर खाते हैं। इनकी विशेषता यह है कि यह पत्तियों में छिद्र नहीं करते । खुर्चा हुआ भाग जालीदार हो जाता है जिसमें केवल शिराऐं ही दिखाई देती हैं। छोटे पौधों पर पत्तियों का आकार छोटा तथा संख्या कम होने के कारण हानि होती है।

रोकथाम :

1. पत्तियों की निचली सतह पर पीले रंग के अण्डों के झुण्डों को दबा कर कुचल देना चाहिए।
2. पौधों पर कार्बारिल अथवा मैलाथियान धूल का बुरकाव 20–25 कि0 ग्रा0 प्रति है0 की दर से करने से लाभ होता है।
3. कीटनाशियों के तीन से चार छिड़काव करने से अच्छा नियंत्रण प्राप्त होता है। प्रथम छिड़काव रोपाई के 30–40 दिन पश्चात करना चाहिए। क्विनलफॉस 25 ई0सी0 2 लीटर मात्रा प्रति है0 की दर से आवश्यकतानुसार घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। अगले तीन छिड़काव 15–20 दिन के अन्तराल पर करने चाहिए। इन अवस्थाओं कॉर्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील पाउडर की 1.5 कि0ग्रा0 अथवा फेनवेलरेट 20 ई0 सी0 की 300 मि0 लि0 अथवा सायप्रमेथ्रिन 25 ई0 सी0 की 200 मि0 लि0 मात्रा प्रति है0 की दर से छिड़कनी चाहिए।

तना बेधक :

इस कीट का प्रकोप प्रायः कम होता है। यह कीट बड़े पौधों को हानि पहुँचाता है।

हानि तथा लक्षण :

कीट की सूंडी ही हानि पहुँचाती है। सूंड़ी मुख्य शाखाओं अथवा तनों में प्रवेश करके भीतर ही भीतर रह कर सुरंग बनाती है। जब यह किसी मुख्य शाखा में प्रवेश करती है तो खाती हुई मुख्य तने में सुरंग बनाते हुए यह नीचे की ओर बढ़ती है परिणामस्वरूप केवल ग्रसित शाखा ही सूख कर नष्ट हो जाती है। मुख्य तने में सुरंग बनाते हुए यह नीचे की ओर बढ़ती है और मिट्टी की सतह से थोड़ा ऊपर तने में छिद्र करती है। इस अवस्था में पूरा पौधा सूख कर मर जाता है। तने के पास मिट्टी पर बुरादा दिखाई देता है। तने में यह छिद्र प्रौढ़ पतंगे के सुरंग से बाहर निकलने के लिए होता है।

रोकथाम :

1. ग्रसित पौधों को सूंड़ियों सहित नष्ट कर देना चाहिए।
2. बैंगन की फसल उन क्षेत्रों में नहीं लेनी चाहिए जहाँ इस कीट का प्रकोप प्रायः होता रहता है।
3. प्ररोह तथा फल बेधक कीट के नियंत्रण के लिए प्रयोग किए गए कीटनाशियों के छिड़काव इस कीट के लिए भी लाभकारी हैं।

पत्तीलपेटक कीट :

इस कीट का प्रकोप वर्षा कालीन फसल में अधिक होता है। इसकी सूंडियाँ बैगनी भूरे रंग की होती हैं तथा उनके भारीर पर रोएँ पाए जाते हैं। इन रोगो के मध्य पीले रंग के धब्बे होते हैं।

हानि तथा लक्षण :

मादा पतंगा पत्तियों पर अण्डे देती है। अण्डों के फुटाव के पश्चात् नवजात सूंड़ियाँ पत्तियों को खुरच कर खा जाती है। इसके पश्चात् बहुत छोटे पौधों की छोटी पत्ती के किनारों को आपस में जोड़ कर भीतर ही भीतर खाती हैं। बड़ी पत्तियों को किनारे से मोड़ कर रेशमी धागों से जोड़ देती हैं तथा उनके भीतर रहकर पत्तियों को खुरच कर खाती हैं। ऐसी पत्तियाँ सूख कर गिर जाती हैं। इन्हीं मुड़ी हुई पत्तियों में यह प्यूपावस्था में परिवर्तित हो जाती हैं।

रोकथाम :

1. छोटे पौधों की मुड़ी हुई पत्तियों तथा बड़े पौधों में मुड़ी पत्तियों को तोड़ कर नष्ट कर देने से उनके भीतर सूँडी अथवा प्यूपा भी नष्ट हो जाते हैं।
2. यदि प्रकोप अधिक हो तो कार्बोरिल 50 प्रतिशत घुलनशील पाउडर को आवश्यकतानुसार पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

रस चूसने वाले कीट :

माहू : माहू की दो जातियाँ प्रायः बैंगन को हानि पहुँचाती हैं। यह कोमल भारीर वाले पीले हरे अथवा काले रंग के कीट हैं। प्रायः पंखहीन होते हैं तथा पत्तियों की निचली सतह समूहों में रहते हैं।

हानि :

शिशु तथा प्रौढ़ माहू पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते रहते हैं। अधिक रस चूसने के कारण पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं तथा धीरे धीरे सूखने लगती हैं। माहू का भाहद चिपचिपा पदार्थ उत्सर्जित करता

है और उस पर काली फफँदी की परत पड़ जाती है। इससे पत्तियों द्वारा भोजन बनाने की प्रक्रिया में बाधा पहुँचने के कारण पौधे कमजोर हो जाते हैं।

रोकथाम :

1. फल लगने से पूर्व की अवस्था में आक्सीडिमिटान मिथाईल 25 ई0 सी0 600–800 मि0 लि0 दबा लगभग 500–600 लिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से कीट का नियंत्रण हो जाता है।
2. यदि माहू का प्रकोप फल लगने की अवस्था में हो तो मैलाथियान 50 ई0 सी0 1 लिटर 500 –600 लिटर पानी में घोल बना कर पत्तियों की ऊपरी तथा निचली सतह पर छिड़काव करना चाहिए।

लाल अष्टपदी :

यह कीट वर्ग का नहीं है। इसकी चार जोड़ी टांगे होती हैं तथा भारीर दो भागों में विभक्त रहता है। इसे लाल मकड़ी माइट अथवा दो धब्बों वाली माइट भी कहते हैं। इनका आकार सूक्ष्म होता है तथा भारीर चमकीले लाल रंग का होता है।

हानि तथा लक्षण :

शिशु तथा प्रौढ़ माइट पत्तियों की निचली सतह की कोशिकाओं से रस चूसते हैं। यह प्रायः एक पतले जाले के अन्दर रह कर कोशिकाओं से रस चूसते हैं। पत्ती की ऊपरी सतह पर सूई की नोक के समान छोटे छोटे पीले धब्बे दिखाई देते हैं। अधिक प्रकोप की अवस्था में पत्तियाँ पीली पड़ जाती है। इसका पौधों की बढ़वार तथा फलों की उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

रोकथाम :

घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करने से इसका नियंत्रण हो जाता है। अधिक गर्मी के दिनों में गंधक का छिड़काव नहीं करना चाहिए। ऐसी अवस्था में मैलाथियान 50 ई0 सी0 500–600 मि0 लि0 दवा 600 लिटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

सफेद मक्खी तथा पर्ण फुदका :

यह दोनों कीट बहु भक्षीय है तथा बैंगन के अतिरिक्त यह भिण्डी, मिर्च , टमाटर, आलू, फ्रेंचबीन तथा कपास आदि को भी हानि पहुँचाती हैं। दोनों कीटों की शिशु तथा प्रौढ़ अवस्थाएँ पत्तियों का रस हानि पहुँचाती हैं। अधिक प्रकोप होने पर पौधों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

नियंत्रण :

इनका नियंत्रण माहू के समान ही है।

सावधानियाँ :

सब्जियों में कीट नियंत्रण के लिए कीटनाशियों के प्रयोग में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। लम्बे समय तक विषैला प्रभाव छोड़ने वाले कीटनाशियों का प्रयोग पौधों की छोटी अवस्था में ही करना चाहिए। फूल आने के पश्चात कम समय तक विषैला प्रभाव रखने वाले कीटनाशियों का प्रकोप करना चाहिए। कीटनाशी के प्रयोग तथा फलों की तुड़ाई में अनुमोदित प्रतिक्षा काल अथवा अन्तराल का पालन करना आवश्यक है। कीटनाशी के प्रयोग से पूर्व तोड़ने योग्य फलों को तोड़ने के पश्चात ही दवा का प्रयोग करना चाहिए। वर्षाकाल में कीटनाशी में घोल में सेन्डोविट एक ग्राम प्रति लिटर घोल की दर से अच्छी तरह से मिला लेना चाहिए। धूल का छिड़काव प्रातः काल तथा जब हवा तेज न हो, तभी करना चाहिए। जाड़ों में पत्तियों से ओस सूख जाने के पश्चात ही छिड़काव करना चाहिए।